डायरी

बाल नाट्य कार्यशाला

❑ विनोद कुमार

डायरी खुद के भीतर झांकने और चीजों पर ठहरकर सोचने का अवसर देती है । इसलिए शिक्षा के प्रसंग में इस विधा की अहमियत और बढ़ जाती है । प्रस्तुत डायरी अंश कुछ असहमति पैदा कर सकते हैं, जैसे शिक्षा के संदर्भ में नाटक की कुछ और भी विशेष भूमिका हो सकती है, और यह भी कि बच्चों के साथ जब शैक्षिक पृष्ठभूमि में कार्यशाला की जा रही हो तो वह सिर्फ सुधारात्मक या प्रचारात्मक ही नहीं होनी चाहिये। तथापि ये डायरी अंश बच्चों के अवलोकन और उनमें निहित संभावनाओं के कई उज्जवल पक्ष सामने रखते हैं । शैक्षिक अनुभवों पर समृद्ध डायरी अंशों को हम आगे भी छापना चाहेंगे ।

रंगकर्म से यूं तो मैं पिछले 15-16 सालों से जुड़ा रहा हूं लेकिन दि एक्सपेरिमेंटल थियेटर फाउंडेशन, मुंबई द्वारा आयोजित एक महीने की नाट्य कार्यशाला मेरे रंग-जीवन के लिए एक बड़ा ही अलग और अनूठा अध्याय है । फाउंडेशन ने यह नाट्य कार्यशाला उन बच्चों के लिए की थी जो मुंबई की गलीज झोपड़ पट्टियों में रहते हैं और बाल मजदूरी करने को अभिशप्त हैं । कार्यशाला में कांदिवली (प.) इलाके के गणेशनगर, गौतमनगर, इस्लाम कंपाउंड, एकतानगर आदि झोपड़पट्टियों के तकरीबन 55 बच्चों ने भाग लिया।

फाउंडेशन के संस्थापक मंजुल भारद्वाज ने नाट्य कार्यशाला को निर्देशित करने की जवाबदेही जब मुझपर सौंपी तो मेरे लिए यह चुनौती भरा काम था क्योंकि झोपड़पट्टी के बच्चों के लिए नाट्य कार्यशाला करने का मेरा पहले का कोई अनुभव नहीं था । इसलिए कार्यशाला को निर्देशित करने की जवाबदेही को लेकर मैं बड़ा रोमांचित था। कार्यशाला शुरू करने से पहले मेरे दिमाग में कई तरह के सवाल थे । साफगोई बरतूं तो कई तरह के डर थे । पता नहीं किस तरह के बच्चे होंगे । उनसे कैसे और कैसा रिश्ता बनाया जाय? बच्चे मुझे स्वीकार कर सकेंगे या नहीं, आदि-आदि ।

लेकिन 13 अक्टूबर 1998 को वो दिन भी आ ही गया जब बच्चों से मेरा सामना हुआ । वो शाम मैं कभी नहीं भूल सकता जब 50 से 55 बच्चे मेरे सामने आश्चर्य की तरह उपस्थित थे । लेकिन जब बच्चों से मेरा परिचय हुआ तो मैंने महसूस किया कि ये बच्चे आम नहीं हैं । सारे के सारे बच्चे मेरे से सवाल पर सवाल करने लगे । पलभर के लिए मुझे खुद को संभालना पड़ा, लेकिन धीरे-धीरे जब मैं उनके ही जैसा हो गया तो मैंने महसूस किया कि बाहरी तौर पर बेशक ये रूखे और बदतमीज दिखते हैं लेकिन वास्तव में इन बच्चों के भीतर एक बड़ा ही दिलचस्प और संवेदनशील इंसान है। जरूरत है तो बस उसे संवारने की । भाषा अनुशासन और संस्कार भरने की और प्यार की । फिर 13 अक्तूबर से 5 नवंबर 98 तक का समय कैसे बीत गया पता ही नहीं चला। बच्चे और में एक परिवार के सदस्य से हो गये थे । मैं जितना उन्हें प्यार करता था, उनकी बदमाशियों पर उसी बुरी तरह से उन्हें डांटा भी करता था। लेकिन मैनें देखा बच्चों ने हमेशा अच्छे बच्चे की तरह अपनी गलती मानी और खुद को सुधारा भी ।

बहरहाल, ये कार्यशाला भले ही बच्चों के लिए आयोजित थी लेकिन इससे मुझे भी काफी कुछ सीखने और समझने को मिला।

13 अक्टूबर, 1998 दिन मंगलवार समय संध्या 5 बजे स्थल गणेश नगर म.न.पा. स्कूल, मेरी उन बच्चों के साथ इस कार्यशाला में प्रथम मुलाकात ।

हम सबने एक दूसरे को देखा परखा, नाम पता पूछा और कुछ औपचारिक बातें की । मैंने महसूस किया कि पहले मुझे इन बच्चों को समझना जरूरी है कि इनका मानसिक स्तर क्या है ? कौन सी बातें इन्हें अच्छी लगती हैं और कौन सी नहीं ? इन्हें कोई बात अच्छी है और कोई बुरी, इसके पीछे इनकी मानसिकता क्या है ? इनकी सोच क्या है ? यह सब उन बच्चों से बातों के दरमियान मुझे पता चल गया । फिर मैंने उन बच्चों को कुछ छोटी कहानियां सुनाई । बच्चे कहानी सुनकर काफी खुश हुए। मैंने प्रतिक्रिया जाननी चाही, कई बच्चों ने जबाव दिया कि हमें इस कहानी से क्या सीख मिली । अब हम लोग भी इस सीख पर अमल करेंगे । मैंने पूछा आप इस सीख पर क्यों और कैसे अमल करेंगे? तो बच्चों ने उत्तर दिया क्योंकि हम लोगों को देश का सच्चा और अच्छा नागरिक बनना है, इसके लिए हम लोग प्रयास अपने आप से, अपने घर से, अपने मुहल्ले से शुरू करेंगे । मुझे काफी खुशी हुई कि बच्चे काफी उत्साहित नजर आए । फिर मैंने बच्चों से कहा कि इस कहानी का

इनएक्टमेन्ट कल करवायेंगे । आप लोगों के पास भी कहानियां होंगी, आप लोग कल तैयारी करके आयेंगे, हम कल कहानी सुनेंगे।

14 अक्टूबर, 1998

शाम को पुन: कार्यशाला शुरू हुई सबसे पहले हमने बच्चों के बीच कुछ व्यायाम करवाए । यह व्यायाम उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रूप से चुस्ती और फुर्ती प्रदान करता है। फिर मैंने अपने द्वारा सुनाई गई पहले दिन की कहानी का इनएक्टमेन्ट (अभिनीत) करवाया । लेकिन सबसे जरूरी और पहले बताने की बात थी नुक्कड़ नाटक और मंचीय नाटक के फर्क ।

नुक्क़ड नाटक आम आदमियों के बीच बिना कोई मंच के, बिना किसी मेकअप या खास वेशभूषा के या बिना किसी खास प्रकाश व्यवस्था के कम समय में होने वाला ऐसा नाटक़ होता है जिसमें कलाकार और दर्शक के बीच दूरी नहीं रहती । कलाकारों के आने जाने, घूमने फिरने पर कोई बंदिश नहीं होती है जिसे आप सड़कों पर या मैदानों मे कहीं भी खेल सकते हैं । इसका उद्देश्य ज्यादातर सामाजिक जागृति का निर्माण करना होता है, जिसमें अक्सर आम आदमी की समस्याओं की सच्चाई को दिखाया जाता हैं । मंच पर होने वाले नाटक के लिए मंच, प्रकाश व्यवस्था, रूपसज्जा, वेशभूषा तथा मंचसज्जा की विस्तृत रूप से जानकारी रखनी होती है तथा उन सभी का विशेष रूप से पालन भी करना पड़ता है । इन सब के अलावा मंच पर कैसे जायें, कैसे खड़े हों, कैसे एक्ट करें । इन सबके बारे में जानना बहुत जरूरी होता है, इसमें दर्शक हमारे सामने बैठे होते हैं ।

16 अक्टूबर, 1998

कल मैंने बच्चों को नुक्कड़ नाटक और मंचीय नाटक में भेद बताया था । आज हमने उस भेद को प्रयोग के जरिये और स्पष्ट कर दिखाया । जिसमें हमने एक ही दृश्य को नुक्कड और मंचीय शैली से करवाया । अब बच्चों को दोनों के अन्तर साफ साफ दिखने लगे । उन्हें काफी मजा आने लगा, उनका उत्साह बढ़ने लगा। फिर मैंने प्रकाश व्यवस्था, रूपसज्जा एवं मंचसज्जा के बारे में भी थोड़ी-थोड़ी जानकारी दी ।

एक घंटे के बाद बच्चों को कुछ समय के लिए मुक्त छोड़ दिया । बाद में फिर काम शुरू किया । बच्चों को बीच में अगर आप अपने विषय से थोड़ा अलग हटा दें या हंसी-ठिठोली करें या कोई थोड़े समय का खेल खेलें तो इन्हें काफी अच्छा लगता है। ये अपने आपको काफी तरोताजा महसूस करते हैं । इससे इनकी काम करने की क्षमता बढ़ जाती है और ये बच्चे काफी ध्यान से आगे का काम करते हैं । आज अंत मे मैंने इन्हें बताया कि नाटक करने से पहले काफी चीजों के बारे में सोचना जरूरी होता है, इस पर कल हम विस्तार से काम करेंगे ।

16 अक्टूबर, 1998

आज हमने बच्चों को बताया कि नाटक करने से पहले जो चीजें जरूरी होती है उसमें सबसे पहले तुम्हें यह सोचना और समझना होता है कि तुम क्या कर रहे हो ? कोई भूमिका कर रहे हो या बैक स्टेज का काम कर रहे हो ? अगर तुम कोई भूमिका कर रहे हो तो इस पर सोचो । तुम्हें जो भूमिका मिली है हकीकत में तुमने उसे कहीं देखा है । वास्तविक जिंदगी में अगर नहीं तो फिल्मों या सीरियलों में, या फिर तुम उसकी कल्पना करो । फिल्मों या सीरियलों में से लिए गये उस कैरेक्टर से तो बेहतर है तुम उसकी बेहतर कल्पना करो कि उसे कैसे बोलना चाहिये ? कैसे, चलना और बैठना चाहिए ? यह सब तुम्हें उस चरित्र को अभिव्यक्त करने में मदद करेंगे । इसके बाद नाटक में उस कैरेक्टर की स्थिति क्या है ? संवाद कैसे हैं ? संवाद बोलते समय चेहरे पर उसके मुताबिक भाव होने चाहिए । सामने वाले के संवाद सुनकर उसके मुताबिक भी तुम्हारे चेहरे पर भाव होने चाहिए । हमें संवाद के उतार चढ़ाव का भी ध्यान रखना होता है । इसके अलावा हमें किधर से आना है तथा किधर जाना है ? क्या पहनना है, इन सब बातों की जानकारी आपको नाटक खेलने या करने के पहले स्पष्ट रूप से रहनी चाहिए। और यदि आप बैक स्टेज कर रहें हों तो सारी चीजों की व्यवस्था, मंचसज्जा, रूप सज्जा, वेशभूषा आदि का काम आपके जिम्मे आता है, जिसे आपको निष्पक्ष रूप से ओर तत्पर रहकर करना पड़ता है। क्योंकि नाटक कोई एक व्यक्ति विशेष से जुड़ा नहीं रहता है, यह पूरी टीम के सामूहिक परिश्रम का फल होता है, जिसमें निष्पक्षता और अनुशासन बहुत जरूरी होता है ।

18 अक्टूबर, 1998

अनुशासन नाटकों में ही नहीं आम जीवन में भी बहुत जरूरी होता है । तुम्हें यह सीखना ही चाहिये कि किसी से कैसे बातें करें, कैसे उठे बैठे, कैसे खायें पियें, कैसे चले ? अगर तुम तमाम अच्छे तौर तरीके, चाल चलन सीख लोगे तो तुम भी इस देश के अच्छे नागरिक कहलाओगे ।

आज हमने अपने देश के त्यौंहारों के बारे में बात की क्योंकि कल दीपावली का त्यौहार है । मैंने बच्चों को बताया कि दीपावली की शुरूआत कब और कैसे हुई ? इसके पीछे जो कहानियां थी। उन्हे सुनाया । बच्चे काफी खुश और उत्साहित दिखने लगे । फिर मैंने उन कहानियों का इनएक्टमेन्ट करवाया । कहानियां सुनाने के

बाद जब हमने उसका इनएक्टमेंट करवाया तब बच्चों को केवल उठने बैठने के बारे में तथा आने जाने के बारे में बताया । कोई संवाद नहीं दिया मैंने और ना ही कोई दृश्य स्थिति । बच्चे अपने आप सब करते चले गये, उन्होंने मेरी उम्मीदों से कही ज्यादा अच्छा काम किया । इसकी सबसे बड़ी वजह मैं मानता हूं कि आप जो बातें बच्चों से कहते हैं उसे साफ सुथरे और अच्छे अंदाज में कहें । उसके कहने का स्तर ऐसा हो जिसे बच्चे आसानी से ग्रहण कर सकें । जब आपको लगे कि अब बच्चे बातों को सही तरीके से नहीं सुन रहे हैं तो आप कुछ और कीजिए । अपना तरीका बदलिए । किसी भी हालत में अपने आपको चार्ज रखना पड़ेगा नहीं तो आपके द्वारा कही गयी बातें या किये गये दृश्यों में कभी जान नहीं आ सकती है ।

20 अक्टूबर 1998

आज हमने बच्चों से गाना गाने को कहा । कुछ ने फिल्मी गीत गायें तो कुछ ने राष्ट्रगीत गाये । मैंने बच्चों को बताया कि गाने के जरिये भी हम नाटक करते हैं । पहले इसकी शुरुआत कैसे हुई ? आज इसकी क्या स्थिति है ? हम लोग भी इसका एक छोटा सा अंश करेंगे, किसी दिन यहां इसी कार्यशाला में । आज हमने दृश्य के इम्प्रूवाइजेशन (नाट्य - अभ्यास) पर काम किया । एक छोटा सा दृश्य बच्चों को दिया और उसे अलग अलग ग्रुप से करवाया। फिर उसका विश्लेषण किया। हमने यह चर्चा भी की कि इसमें गलत क्या किया, और सही क्या किया ? क्यों यह गलत है या क्यों वह सही है इसका विशेलेषण करना आपके लिए बहुत जरूरी होता है तभी उसे समझ पायेंगे । इसी तरह से हमने कुछ और दृश्यों का इम्प्रूवाइजेशन करवाया । धीरे धीरे बच्चों को भी समझ में आने लगा कि इंप्रूवाइजेशन क्या होता है । इस तरह लगातार कराते रहने से बच्चों के अंदर की नाट्य क्षमता में जबरदस्त विकास होता है।

21 अक्टूबर, 1998

आज हमने कार्यशाला में सबसे पहले अलग अलग चालों (चलने के बारे में) विश्लेषण किया। किसकी चाल कैसी होती है? या कैसी होनी चाहिये ? उससे हमें कोई भूमिका निभाने में क्या और कितनी मदद मिलती है ? पहले मैंने बच्चों को एक एक करके इसका प्रयोग करवाया, फिर सामूहिक तौर पर भी हमने इसका प्रयोग किया । अन्त में मैंने स्वयं सभी तरह के लोगों की चालों का प्रयोग कर बच्चों को दिखाया । फिर इसका विश्लेषण किया। मैंने बच्चों को बताया कि आप जहां रहते हो वहां हर तरह के लोग रहते हैं या आते जाते रहते हैं, आप उसे थोड़े समय के लिए देखिये और उनकी भिन्न-भिन्न आदतों को अपने ध्यान में रख लें, जिसमें उसकी चाल भी सम्मिलित होगी । इस तरह का निरीक्षण आपके लिए अपनी भूमिका को सही तरह से करने में काफी सहायक सिद्ध होगा। यह कला आपके आम जिंदगी में भी काफी सहायक सिद्ध होगी ।

22-23 अक्टूबर, 1998

रंगकर्मी राजेन्द्र पाण्डे ने दोनों दिन बच्चों को संबोधित किया। उन्हें विषय दिया गया था कि आप बच्चों को बतायेंगे, मंच क्या होता है ? उसका उपयोग हम लोग किस तरह से करते हैं ? प्रकाश व्यवस्था क्या होती है ? उन्होंने बच्चों को इस बारे में काफी हद तक अच्छी जानकारी दी लेकिन उसका किसी तरह से प्रयोग करके नहीं बताया । इससे बच्चों के उत्साह में काफी फर्क पड़ा । और इसमें उनकी दिलचस्पी कम नजर आने लगी ।

जैसा कि मैंने पहले बताया था कि बच्चों की दिलचस्पी को बरकरार रखने के लिए आपको हर तरह के प्रयोग करने होंगे । अपनी भाषा शैली में सुधार करना होगा और सबसे बड़ी बात आप उनका हौसला बढ़ाते रहा कीजिए ना कि उनके छोटेपन या कमतर होने के अहसास को और उभार कर उनके हौसले को ही पस्त कर दीजिये । छोटी-छोटी बातों पर उन्हें उत्साहित करना बहुत जरूरी होता है । बच्चों को संबोधित करने की कला में भी आपको प्रवीण होना जरूरी होता है ।

24 अक्टूबर, 1998

आज कार्यशाला में हम लोगों ने पूर्णत: नाटक से संबंधित जितने भी व्यायाम होते हैं उन पर काम किया।

सबसे पहले बच्चों से शारीरिक व्यायाम करवाया। जिसके अर्न्तगत हाथ पांव, कमर, सिर तथा गर्दन से संबंधित व्यायाम किये। इसके बाद जो सबसे ज्यादा जरूरी व्यायाम होता है वह है मानसिक व्यायाम । यह एक ऐसा व्यायाम है जिसके जरिये आप बच्चों में किसी चीज के प्रति ललक जगा सकते हैं । उनके जोश तथा उत्साह को बढ़ावा दे सकते हैं इससे वे अपने कार्य को ध्यान देकर पूरा करते हैं ।

इसके अलावा और कई व्यायाम हैं जिन्हें हम लोगों ने किया .... जैसे आवाज को सही करने का व्यायाम, ध्यान लगाना, आंखों का व्यायाम इत्यादि । व्यायाम के बाद बच्चों को रिलेक्सेशन का व्यायाम अवश्य करवाना चाहिये जिससे वे लोग संतुलित रह सकें। अन्त में रोज की तरह कुछ देर के लिए आंखे बंद करें और सोचें कि आज हम लोगों ने शुरू से आखिर तक क्या क्या किया? बहुत जरूरी होता है यह सब । यह भी याद्दाश्त को सही बनाये रखने के लिए एक तरह का व्यायाम होता है ।

26 अक्टूबर, 1998

कार्यशाला में 24 अक्टूबर, को किये गये व्यायाम को फिर से करवाया क्योंकि यह बुनियाद होता है किसी भी तरह से रंगकर्म के लिए। फिर हम लोगों ने इम्प्रूवाइजेशन पर एक बार और काम किया । इससे मानसिक कार्यक्षमता का विकास होता है । मैंने देखा कि पिछले कई दिनों से लगातार व्यायाम, इम्प्रूवाइजेशन तथा नाटक से संबंधित तमाम बातों में सारे बच्चों की दिलचस्पी बढ़ती जा रही है । जिन बातों को बच्चों को हम कह कर नहीं समझा सकते थे वही बातें बच्चे नाटक द्वारा ग्रहण कर रहे हैं । फिर मैंने उन तमाम बातों की फेहरिस्त बनाई जो एक आम आदमी की जिंदगी से जुड़ी होती है, जैसे कहीं कोई दुर्घटना हो जाए तो वहां क्या और कैसे हमें काम करना चाहिए । किसी की सहायता कैसे करें, हमारे अधिकार और कर्तव्य क्या हैं । यानि तमाम वे बातें जो हम समाज में रहकर एक दूसरे की सहायता के लिए करते हैं । इन सबों को छोटे छोटे दृश्यों के जरिये बच्चों से करवाया । अन्त में हमने इस पर विस्तृत चर्चा की, उसका विश्लेषण किया । बच्चों के दिमाग पर इसकी जबरदस्त छाप पड़ी । उन लोगों ने स्वीकार किया कि अब हम लोग भी दूसरों की सेवा करेंगे । दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे ।

27 अक्टूबर, 1998

आज कार्यशाला में कल किये गये सभी दृश्यों को फिर से करवाया । फिर बच्चों ने खुद ही उन दृश्यों पर बहस की । उन्होंने कहा कि सर पहले हम फलां काम नहीं करते थे । नाटक करने के बाद मुझे पता चला कि फलां मेरी गलती थी । आज हम लोग इसे सुधार लेंगे तथा बस्ती के और लोगों को भी बतायेंगे । यह हमारे कार्यशाला के लिए काफी अच्छी बात हुई कि बच्चों के अन्दर का अहसास अब जगने लगा है, बस जरूरत है उन्हें और हवा देने की।

ब्रेक के बाद हम लोगों ने बातचीत शुरू की संगीत के बारे में । मैनें देखा बच्चों में इस विषय के प्रति जबरदस्त रुझान है । संगीत हमारे जीवन को किस तरह प्रभावित करता है, इसके लिए मैंने एक छोटी सी कहानी सुनाई । बाद में उसका इनएक्टमेन्ट भी करवाया । बच्चों को काफी मजा आया । फिर मैंने बताया कि किस तरह संगीत हमारे नाटकों में अपना प्रभाव दिखाता है ? कितनी अहम भूमिका होती है संगीत की किसी नाटक को अच्छा बनाने में? बच्चों ने एक गाने की जिद की, मैंने उन्हें मुद्राराक्षस लिखित नौटंकी शैली का गाना 'साफ करो, साफ करो, झुग्गियां साफ करो' सुनाया । उन्हें काफी अच्छा लगा, फिर उन्हें लिखवा दिया। बोला याद करके आओ कल इस पर काम करेंगे।

28 अक्टूबर, 1998

आज कार्यशाला में हम लोगों ने माईम पर काम किया । बच्चों से पहले माईम के बारे में विस्तृत चर्चा की ।फिर इसका प्रयोग करके बताया । बच्चों को यह बताया एवं दिखाया कि छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी चीजों को या किसी भी स्थिति को हम कैसे माईम द्वारा दिखाते हैं ।

अंत में कल लिखवाये गये गाने को बच्चों से गवाया । पहले सबको एक एक करके गवाया फिर समवेत स्वर में । बच्चों को अकेले गवाने से उसकी स्वर की खामियां और खूबियां पता चलीं जिससे हमें काम करना आसान हो गया । बिना किसी साज के बच्चों के लिए यह काफी मुश्किल काम था कि गाने को कैसे और कब शुरू करें और कहां उठायें या कहां खत्म करें ? मैंने उनकी मुश्किल को आसन किया ताली के प्रयोग से । वस्तुत: इस गाने में नगाड़ा और डुग्गी का ही प्रयोग ज्यादा होता है, नगाड़ा के बीट को ताली बजाकर उनके सन्मुख पेश किया जिससे उनकी मुश्किले आसान हो गई और गाना काफी अच्छा बन गया । अब इस गाने पर जो काम करने को बचा वह था इनएक्टमेंट की जिसे हम अगले दिन करवायेंगे ।

29 अक्टूबर 1998

आज कार्यशाला में सबसे पहले काम किया भाव-भंगिमाओ पर।

बच्चों से चर्चा की, भाव क्या होते हैं ? हमारे नाटकों में क्यों जरूरी होते हैं ? किसी ने कुछ किसी ने कुछ, सबने इस विषय पर कुछ न कुछ कहा । मुझे इस बात की काफी खुशी हुई कि अब बच्चों को अपने भाव अभिव्यक्त करने के लिए शब्द मिलने लगे हैं । आपका इसलिए उनके साथ चर्चा करना रोज जरूरी हो जाता है इससे उन्हें शब्दों का कुछ न कुछ फायदा जरूर होता है ।

बहरहाल हम लोगों ने एक बच्चे को खड़ा कर सारे भावों को बिना किसी शब्द के अभिव्यक्त करने को कहा । फिर शब्दों के जरिये । फिर अलग अलग तरीके से उसका प्रयोग भी करवाया जैसे दो लड़के आमने सामने रहेंगे । कोई एक लाईन उन्हें दी गई या एक ही शब्द दिया । उन्हें बोला गया कि सामने वाला भाव व्यक्त करे। सारे बच्चों ने इसे अच्छे से किया ।

अंत में, मैंने उन्हें बताया कि जब हम मंच पर होते हैं तो हमारे चेहरे पर भाव प्रति भाव कैसे और किस तरह से होते हैं । शरीर की स्थिति हाथ पैर की स्थिति क्या और कैसी रहनी चाहिये ।

30 अक्टूबर, 1998

आज बच्चों को सिर्फ एक शब्द दिया 'आम' और बोला अब आप लोग एक एक करके आयें और अपने भावों को इस शब्द के जरिये दर्शाये । कल किये गये काम का जबरदस्त असर इन बच्चों पर देखने को मिला । सारे बच्चों ने काफी अच्छा काम किया। फिर मैंने दो बच्चों को एक लाईन दी, ''मैं जलेबी खाऊंगा।'' इस पर कोई एक ही भाव लेकर नीचे से लेकर ऊपर की स्तर तक आपको जाना है । फिर इसी तरह नीचे के स्वर से लेकर ऊपर के स्वर तक जाते वक्त सारे भाव इसी लाईन में लाने हैं । बच्चों में होड़ लग गई । सबने एक से बढ़कर एक प्रदर्शन किया ।

अंत में 28 अक्टूबर को गवाया गया गाना, बच्चों से फिर गवाया और फिर उसका इनएक्टमेन्ट भी करवाया । बच्चों को वह गाना इतना अच्छा लगा कि जब वह बाहर सड़क पर से होते हुए वापस घर जा रहे थे, तब वही गाना वे लोग गाते जा रहे थे ।

31 अक्टूबर, 1998

सबसे पहले गाने के इनएक्टमेन्ट को फिर से करवाया। भाव-भंगिमा पर आज हम लोगों ने पुन: काम किया । ब्रेक के बाद बच्चों को पुन: एक बार मंच की प्रकाश-व्यवस्था, मंच-सज्जा, रूप-सज्जा तथा वेशभूषा एवं मंच संबंधित अन्य जानकारियां दी। प्रकाश व्यवस्था को समझाने के लिए तीन-चार दृश्यों के नाटक का भी एक प्रयोग किया । एक साथ मंच पर अलग अलग ग्रुप बनाकर बच्चों को बिठाया । उन्हें समझाया कि यह तुम्हारा घर है, और यह तुम्हारे खेलने का मैदान । यह बाजार है तथा यह तुम्हारे दोस्त का घर है। अब जैसे जैसे लाईट हर जगह जलेगी वैसे वैसे तुम्हें काम करना होगा । इसके लिए मैंने एक बार फिर तालियों का प्रयोग किया । तालियों के जरिये बच्चों ने अपना काम काफी अच्छे ढंग से किया। उनमें वाकई इस प्रयोग से प्रकाश व्यवस्था की काफी अच्छी समझ आ गई ।

1 नवम्बर से 5 नवम्बर 1998

अब हम कार्यशाला के अन्तिम दौर में आ गये हैं । इसलिए यह जरूरी है कि अभी तक हमने जो भी कार्य किया है, उसे कम से कम चार पांच दिन अवश्य दुहरा लें । इसी क्रम में हमारी यह पांच दिनों तक रोज की रुटीन हो गई ।

पहले हम लोगों ने चर्चा की , कि अभी तक किन किन कहानियों का एनएक्टमेंट करवाया है । फिर उनकी एक सीरिज बनाकर उनका अभ्यास हम रोज करने लगे । अब हम उनके नाटक के स्तर को और बेहतर बनाने के लिए उन पर मेहनत करने लगे। भाषा शैली और कहानी सुनाने के तरीकों पर भी हमने पुन: काम किया। 'माईम' संबंधित बातें एवं उसके प्रयोग वाले दृश्यों को हमने बार बार किया। गाना तथा गाने का इनएक्टमेंट हम लगभग रोज करते रहे । रोज की तरह तमाम व्यायाम कार्यशाला के शुरू में पांच दिनों तक लगातार करते रहे । नित्य प्रति होने वाली चर्चा में अनुशासन, व्यक्तित्व , समाज तथा मंच से संबंधित तमाम बातों पर गौर करते रहे। किसी दृश्य के इम्प्रूवाइजेशन पर इन पांच दिनों में हमने बार बार काम किया।

ऑबजरवेशन (अवलोकन) पर भी बच्चों ने अंतिम पांच दिनों में काफी काम किया और हर रोज कोई न कोई कैरेक्टर औबजर्व कर लाते और सबके सम्मुख पेश करते रहे । भाव-भंगिमाओं पर भी हम लोगों ने लगातार काम किया । रोज की तरह कार्यशाला के अन्त में बच्चे अपने अपने कार्यों का विश्लेषण करते रहे । इस बीच हमारे रंगकर्मी और लेखक मित्र धनंजय कुमार ने भी कई दिन बच्चों को संबोधित किया । उन्हें हमने विषय दिया था बच्चों की मानसिकता, समाज में उनकी भूमिका, उनकी आम जिंदगी में उठने, बैठने, चलने तथा बात करने के तरीके आदि ।

वह इन बच्चों से बहुत खुश हुए और उन्होंने कहा कि मैं इन बच्चों के लिए जल्द ही एक मंचीय नाटक लिखकर आपको दूंगा, जिसका मंचन आप करवायेंगे एवं उसका शीर्षक होगा 'विद्या ददाति विनयम्' । ◆